विचार बिन्दु

इतिहास के तजुर्बों से हम सबक नहीं लेते, इसीलिए इतिहास अपने आप को दोहराता है। –विनोबा

गणतंत्र में गण, गौण

नीतीश कुमार ने एक बार पुनः महागठबंधन से नाता तोड़कर भारतीय जनता पार्टी के साथ जुड़कर सरकार बनाई और नौवीं बार बिहार के मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। इससे पहले साल 2000 में वे मुख्यमंत्री बने थे किंतु बहुमत सिद्ध न कर पाने के कारण उन्हें 7 दिन में ही इस्तीफा देना पड़ा था।2005 से 2013 तक भाजपा के साथ मिलकर नीतीश कुमार ने सरकार बनाई और मुख्यमंत्री के पद पर आसीन रहे। 2014 में जब प्रधान नरेंद्र मोदी को प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार बीजेपी द्वारा बनाया गया तो उन्होंने एन.डी. से नाता तोड़कर दिया और मांजी को मुख्यमंत्री बनवाया। 2015 में मांझी को हटाकर खुद गठबंधन के माध्यम से मुख्यमंत्री के पद पर आसीन हो गए। इसके बाद, चुनाव में महागठबंधन को बहुमत मिला और नीतीश कुमार मुख्यमंत्री बने। 2017 में इन्होंने फिर राष्ट्रीय जनता दल से नाता तोड़ लिया और एनडीए में लौटकर सरकार बनाई एवं मुख्यमंत्री बने। 2020 का चुनाव भी उन्होंने एनडीए के साथ ही लड़ा और बहुमत प्राप्त किया ,किंतु 2022 में फिर एनडीए से अलग हुए और महागठबंधन से जुड़ कर मुख्यमंत्री बने। अब, 28 जनवरी को एक बार फिर महा गठबंधन को छोड़कर एनडीए के साथ चले गए। नीतिश कुमार ने प्रातः काल इस्तीफा दिया और शाम को पुनः मुख्यमंत्री पद की शपथ ले ली। मुख्यमंत्री पद पर उनकी यह नौवीं बार शपथ थी।

विडंबना यह है कि निर्वाचित प्रतिनिधि द्वारा अपना दल बदल करने से रोकने के लिए तो दल बदल विरोधी कानून लागू हो जाता है, किंतु पूरा दल ही यदि किसी एक विचारधारा के संगठन के स्थान पर दूसरे के साथ गठबंधन कर लें तो उसके लिए कोई कानून नहीं है। उस दल की न तो मान्यता समाप्त होती है एवं न ही उसके सदस्यों की सदस्यता समाप्त होती है। नीतीश कुमार कुछ दिन पूर्व ही जनता दल (यू) के अध्यक्ष पद पर आसीन हुए थे एवं इस कारण उनके पास इस दल के बारे में निर्णय करने की शक्तियां भी प्राप्त हो गई थीं।

संसद और विधानसभाओं में चुने हुए जनप्रतिनिधियों द्वारा दल बदल की घटनाएँ बहुत बढ़ने लगीं तो उन पर नियंत्रण करने के लिए दल बदल कानून बनाया गया। जब यह भी दल बदल को रोकने में अधिक प्रभावी नहीं हुआ तो यह शर्त लगाई गई कि किसी भी दल के निर्वाचित विधायकों या सांसदों में से न्यूनतम दो तिहाई दल बदल करें तब ही उनकी सदस्यता बची रहेगी अन्यथा उनकी सदस्यता समाप्त हो जाएगी।

नीतीश कुमार ने जो किया है उसे रोकने का कोई कानून नहीं है। जिस विचारधारा से सहमत होते हुए मतदाता ने जनता दल (यू) को जिताया था,यदि वही अगले चुनाव से पूर्व किसी और के साथ गठबंधन कर ले तो, इसे मतदाताओं के साथ एक प्रकार से धोखा ही कहा जा सकता है। हद तो तब हो गई, जब 2005 के बाद तीन बार नीतीश कुमार ने राष्ट्रीय जनता दल एवं कांग्रेस से समझौता किया और तीन बार उसे तोड़ा तथा भारतीय जनता पार्टी और एन डी ए के साथ समझौता किया। यही पता नहीं लग रहा है कि नीतीश कुमार चाहते क्या हैं? शायद यही कि वे किसी न किसी प्रकार मुख्यमंत्री के पद पर बने रहें। क्या किसी व्यक्ति की महत्वाकांक्षा इतनी अधिक हो सकती है कि वह सारे सिद्धांतों को तिलांजलि देकर हर दो-तीन वर्षों में अपनी प्रतिबद्धता को बदलता रहे?

नीतीश कुमार जब प्रारंभ में सत्ता में आए थे तो उनके काम के कारण उनकी पहचान 'सुशासन बाबू' के रूप में बनी थी। पहली बार यह लगा कि बिहार में लालू यादव के समय का जंगल राज समाप्त होने को है। उन्होंने पूरी निर्भीकता और निष्पक्षता के साथ शहाबुद्दीन जैसे कई बाहुबलियों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की और उन्हें जेल भिजवाया। जो ख्याति नीतीश कुमार ने अच्छा काम करके प्रारंभिक नौ वर्षों (2005 से 2013) में अर्जित की और बिहार को राष्ट्रीय परिदृश्य पर प्रगति शील राज्य के रूप में स्थापित किया, वह हाल के कुछ सालों में धूल धुसरित हो गई है। हाल ही में महागठबंधन से नाता तोड़कर एनडीए के साथ मिलकर सरकार बनाने का निर्णय तो अविश्वसनीय ही कहा जा सकता है।

जब 2013 में नीतीश कुमार ने भाजपा के साथ गठबंधन को तोड़ा था तब से, वे निरंतर नरेंद्र मोदी और भाजपा की आलोचना करने से नहीं थकते थे। 2016 में उन्होंने फिर एन डी ए के साथ गठबंधन किया और लालू यादव एवं उनके नेताओं को जी भर के कोसना प्रारंभ कर दिया। 2019 में लोक सभा का चुनाव एन डी ए के साथ लड़ा और 40 में से 39 सीटों पर विजय प्राप्त की। 2020 के विधानसभा चुनाव में वे भाजपा के साथ आए और सत्ता प्राप्त की। 2022 में उन्होंने राष्ट्रीय जनता दल और कांग्रेस के साथ महागठबंधन बनाया और मुख्यमंत्री बने रहे। हाल ही में फिर 2024 में बीजेपी के साथ आ गए और गठबंधन को छोड़ दिया।

यह देश का दुर्भाग्य ही है कि इस प्रकार की प्रवृत्ति को बढ़ाने वाले लोग मतदाताओं के समर्थन से सत्ता प्राप्त कर लेते हैं। यदि इस प्रवृत्ति को समाप्त करना है तो इसका दायित्व अब साधारण मतदाता को अपने हाथ में लेना होगा और सबक सिखाना होगा ऐसा नेताओं को, जो उनके साथ समय-समय पर विश्वास घात करते हुए पाला बदलने में कोई संकोच नहीं करते हैं।

जो प्रयास विपक्ष दलों की एकता का 'इंडिया' गठबंधन बनाकर किया जा रहा था उसमें प्रमुख भूमिका नीतीश कुमार की ही थी। उनके इस आचरण से यह तो स्पष्ट ही हो गया है कि राजनीति में शुचिता और नैतिकता का कोई स्थान शेष नहीं है। यहां सर्वोपरि है, स्वयं का सत्ता में बने रहना। दलों के अंदर तो व्यक्तियों का संघर्ष देखा गया है किंतु पूरे के पूरे दल द्वारा किसी का साथ छोड़कर दूसरे के साथ मिलने की जो कार्रवाई अभी की है, वैसा उदाहरण बहुत नहीं देखने को मिलता है। कैसे किसी की अंतरात्मा गवाही दे सकती है कि कल तक जिसको कोस रहे हों, और विभिन्न प्रकार के अपशब्दों का प्रयोग कर रहे हों, आज उन्हीं के साथ मंच साझा करके चुनाव प्रचार करें और जिनके साथ अब तक सरकार चला रहे थे, उन्हीं को बड़ा बुरा कहना प्रारंभ कर दें।

संयोग से नीतीश कुमार द्वारा भाजपा के साथ गठबंधन करने का काम भी तभी किया गया जब 2 दिन पूर्व ही 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस मनाया गया था। गणतंत्र दिवस मनाया ही इसलिए जाता है कि इस दिन भारत एक गणतंत्र के रूप में स्थापित हुआ था। गणतंत्र का अर्थ ही यह है कि जनसाधारण की सत्ता सर्वोच्च है।

आजकल जो जनप्रतिनिधि कर रहे हैं, उसमें जनसाधारण की भूमिका केवल पांच साल में एक बार वोट देने तक सीमित हो गई। जो लोग चुने जाते हैं, वे सिद्धांतो को ताक में रखकर अवसरवादिता की पराकाष्ठा करते हुए पाला बदलते रहते हैं। ऐसा करके हम गणतंत्र की धारणा को ही नकारने की बात कर रहे हैं।

समय आ गया है, जब ऐसा कोई कानून बनाया जाए जिसमें एक बार कोई दल किसी दल/गठबंधन के साथ मिलकर सरकार बनाए और यदि वह अगले चुनाव से पूर्व ही किसी अन्य दल के साथ मिल जाय तो उसकी मान्यता निलंबित रहे अथवा उस दल के सभी निर्वाचित सदस्यों की सदस्यता समाप्त हो जाए। ऐसा करने पर ही गिरगिट की तरह रंग बदलने की प्रथा पर अंकुश लगाया जा सकता है। यदि ऐसा नहीं किया गया तो नेतागण गिरगिट की तरह रंग बदलते ही रहेंगे यानि पाला बदलते रहेंगे।

ऐसी संभावना है कि लोकसभा चुनाव के बाद नीतीश कुमार न इधर के रहेंगे ना उधर के और भारतीय जनता पार्टी उन्हें हाशिये पर धकेल देगी। इस प्रकार के नेताओं को सबक सिखाने का काम केवल जनता ही कर सकती है। अब उसे यह अधिकार काम में लेना ही चाहिए।

नीतीश कुमार की बार-बार पाला बदलने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देने में भारतीय जनता पार्टी एवं उनके नेताओं ने भी पूरा सहयोग किया है और उसका भी उद्देश्य सत्ता में बने रहना है। जो नीतिश कुमार, मोदी समेत, भारतीय जनता पार्टी के नेताओं को सार्वजनिक मंच से कोष रहे थे, अब उन्हीं से समझौता करके अपने साथ पास में मंच पर बिठाकर कैसा अनुभव भाजपा के नेताओं को होता होगा, इसकी कल्पना ही की जा सकती है। लगता है, राजनीति में अब किसी भी प्रकार की सिद्धांत की बात करना बेमानी हो गया है।

यह देश का दुर्भाग्य ही है कि इस प्रकार की प्रवृत्ति को बढ़ाने वाले लोग मतदाताओं के समर्थन से सत्ता प्राप्त कर लेते हैं। यदि इस प्रवृत्ति को समाप्त करना है तो इसका दायित्व अब साधारण मतदाता को अपने हाथ में लेना होगा और सबक सिखाना होगा ऐसा नेताओं को, जो उनके साथ समय-समय पर विश्वास घात करते हुए पाला बदलने में कोई संकोच नहीं करते हैं।

पाठकों को शायद पता हो कि गणतंत्र का शाब्दिक अर्थ है ऐसा राष्ट्र, जिसकी सत्ता जनसाधारण में समाहित है।

नीतीश कुमार ने एक बार फिर पाला बदलते हुए भारतीय जनता पार्टी के साथ गठबंधन करते हुए नौवीं बार बिहार के मुख्यमंत्री के पद की शपथ ग्रहण की। इससे पूर्व तीन बार नीतिश कुमार राष्ट्रीय जनता दल के साथ गठबंधन कर चुके हैं और तीन बार भारतीय जनता पार्टी के साथ गठबंधन कर चुके थे। नीतीश कुमार के बार-बार गठबंधन को बदलने से उनकी छवि को निश्चित रूप से धक्का लगा है। वह इंडिया ब्लॉक या विपक्षी दलों के गठबंधन के संयोजक के रूप में भूमिका निभा रहे थे और रातों रात उन्होंने एन डी ए से समझौता कर लिया। देश में ऐसा कोई भी नेता शायद नहीं होगा जिसने 9 बार किसी राज्य के मुख्यमंत्री पद की शपथ ली होगी। ऐसा भी कोई व्यक्ति नहीं होगा जिसने जिस दल के साथ गठबंधन किया उसे तीन बार तोड़ कर पुनः उसके साथ समझौता किया हो। नीतीश कुमार का यह कृत्य देश की राजनीति में काले अध्याय के रूप में ही देखा जाएगा।

आशा की जानी चाहिए कि बार बार पाला बदलने की यह अंतिम घटना हो। आगामी चुनावों में नीतीश कुमार को बुरी तरह परास्त करके ही यह संदेश दिया जा सकता है कि गिरगिट की तरह रंग बदलने वाले नेताओं को पसंद नहीं किया जाता। फ़िलहाल तो हम यही कह सकते हैं कि नीतीश कुमार को तेजी से रंग बदलते देखकर तो गिरगिट को भी शर्म आ जाए।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

हमारी परीक्षा प्रणाली - दशा और दिशा

प्रो. अशोक कुमार

भारत म लगभग 1,100 स आधक विश्वविद्यालय, 50,000 संबद्ध कॉलेज और 60 स्कूल बोर्ड हैं। उच्च शिक्षा में कुल नामांकन 40.15 मिलियन छात्र हैं।(एआईएसएचई रिपोर्ट 2020-21) नियोक्ता उम्मीदवारों की शैक्षणिक उपलब्धियों और रोजगार के लिए उपयुक्तता का कठोर मूल्यांकन करते हैं।

परीक्षाएँ छात्रों की सीखने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वे न केवल विषय के ज्ञान और समझ का परीक्षण करते हैं बल्कि छात्रों को उनकी ताकत और कमजोरियों की पहचान करने में भी मदद करते हैं। परीक्षा के माध्यम से, छात्र अवधारणाओं को अधिक गहराई से समझ सकते हैं और विषय वस्तु की बेहतर समझ प्राप्त कर सकते हैं।

वर्तमान परीक्षा प्रणाली बहुत ही दोषपूर्ण है क्योंकि अब परीक्षा का उद्देश्य ज्ञानार्जन नहीं बल्कि प्रमाण पत्र प्राप्त करना रह गया है! यह मुख्य रूप से जीविका चलाने और नौकरी पाने का एक साधन हो गई है सम्पूर्ण ज्ञान की परीक्षा नहीं होती है स्मरण शक्ति पर एकमात्र बल दिया जाता है !

क्या छात्रों को अगली कक्षा या सेमेस्टर में प्रमोट करने और उनके ज्ञान का आकलन करने के लिए परीक्षा आयोजित करना पवित्र है? क्या छात्रों को अन्य प्रणाली या माध्यम से प्रमोट और मूल्यांकन नहीं किया जा सकता?

परीक्षा के नाम पर न जाने कितने शैक्षिणक दिन बर्बाद कर दिये जाते हैं। दोनों पक्षों की बहुत सारी ऊर्जा छात्रों द्वारा पेपर लिखने और शिक्षकों द्वारा उनकी जाँच और मूल्यांकन करने में खर्च होती है, जो या तो शिक्षकों द्वारा सिखाई गई एक ही चीज़ होती है या इंटरनेट से चुराई गई होती है। दोनों ही मामलों में, छात्रों द्वारा दिए गए उत्तर उनके अपने नहीं, किसी और के हैं, तो शिक्षक किसका मूल्यांकन कर रहे हैं? परीक्षाओं का आधार क्या है? आज परीक्षा में नकल एक वैश्विक समस्या है। और इसमें कोई बाधा नहीं है क्योंकि विश्वविद्यालयों के साथ हित उलझे हुए हैं।

परीक्षा प्रणाली अब पुरानी और जर्जर हो चुकी है। कुछ नया होना चाहिए और सरकार तथा विश्वविद्यालयों द्वारा अधिक समग्र तरीके अपनाए जाने चाहिए।

वर्तमान परीक्षा प्रणाली में कई खामियां हैं, जो छात्रों की शिक्षा और कौशल के वास्तविक मूल्यांकन में बाधा डालती हैं। परीक्षा प्रणाली के अत्यधिक औपचारिकीकरण के परिणामस्वरूप विनाश हुआ है। प्रश्न पैटर्न, अवधि, मूल्यांकन के मामले में एकरूपता को लेकर अत्यधिक जुनून बीते दिनों के अवशेष हैं। सभी विषय अपनी प्रकृति में भिन्न हैं और मूल्यांकन के लिए अलग-अलग मानदंडों की आवश्यकता होती है। लेकिन हमारा सिस्टम सभी के लिए एक ही आकार में विश्वास रखता है। यह हास्यास्पद है!

परीक्षाओं को नियमित और निरंतर बनाना चाहिए। इससे छात्रों को अपनी सीखने की प्रगति पर लगातार नज़र रखने में मदद मिलेगी।

परीक्षा प्रणाली पर भरोसे में कमी का असर शिक्षा संस्थानों में शिक्षा के स्तर को बुरी तरह प्रभावित करता है।

पढ़ाना और पढ़ना इस प्रकार से होना चाहिए कि किसी भी छात्र को किसी भी प्रकार की परीक्षा के लिए तैयार किया जा सके।

परीक्षा प्रक्रिया में प्रश्न पत्र तैयार करने से लेकर उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन और मार्कशीट तैयार करना शामिल है।

भारत में वर्तमान परीक्षा प्रणाली में एकल-मूल्यांकन की प्रणाली है। यह केवल छात्रों की रटने की क्षमता का परीक्षण करती है और उनकी वास्तविक सीखने और समझ को नहीं मापती है।

यह छात्रों पर बहुत अधिक दबाव डालती है। परीक्षाओं की तैयारी के लिए छात्रों को लंबे घंटे पढ़ाई करनी पड़ती है, जिससे उनमें मानसिक तनाव और चिंता बढ़ जाती है।

यह छात्रों के बीच असमानता को बढ़ावा देती है। धनी और गरीब छात्रों के पास परीक्षाओं की तैयारी के लिए समान संसाधन नहीं होते हैं।

इन खामियों को दूर करने के लिए, भारत में परीक्षा प्रणाली में परीक्षाओं की तैयारी के लिए छात्रों को अधिक समय दिया जाना चाहिए। इससे छात्रों पर दबाव कम होगा और वे अधिक आराम से परीक्षाओं की तैयारी कर पाएंगे।

परीक्षा प्रणाली छात्रों की रचनात्मकता और समस्या-समाधान कौशल का मूल्यांकन करने में विफल रहती है। यह छात्रों को केवल एक ही सही उत्तर वाले प्रश्नों को हल करने के लिए प्रशिक्षित करती है, जो वास्तविक दुनिया में अक्सर आने वाली चुनौतियों के लिए तैयार नहीं है।

स्मृति पर अत्यधिक जोर: परीक्षाओं में अनुप्रयोग, विश्लेषण, आलोचनात्मक सोच आदि जैसे उच्च-स्तरीय कौशलों के बजाय केवल रटने की क्षमता और स्मृति का परीक्षण किया जाता है। समझने में कमी: यह शिक्षण प्रथाओं को छात्रों को वास्तव में अवधारणाओं को समझने के बजाय सामग्री को याद करने पर केंद्रित करती है।

अक्सर यह आरोप लगाए जाते हैं कि परीक्षा बोर्ड केवल रटने की क्षमता को महत्व देते हैं। इसलिए शिक्षक भी छात्रों की बेहतर सोच विकसित करने की जगह प्रश्नों के उत्तर याद करने और अच्छे अंक लाने के लिए तैयार करते हैं।

ऐसे कई मौके आए हैं जब हम प्रश्न पत्रों में भाषा और समझ से जुड़ी गंभीर गलतियां, विषय से अलग प्रश्न और ऐसे प्रश्न देते हैं जो उच्च शिक्षा का परीक्षण नहीं करते हैं।

परीक्षाओं को अधिक बहुआयामी बनाया जाना चाहिए। इसमें विभिन्न प्रकार के प्रश्न शामिल होने चाहिए, जैसे कि वस्तुनिष्ठ प्रश्न, लघु उत्तरीय प्रश्न, और लंबे उत्तरीय प्रश्न। प्रश्न पत्रों को तैयार करने के लिए, शिक्षा सामठी के मुद्दे पर मानक तय किए जा सकते हैं और मूल्यांकन में सावधानी के लिए नियम लाए जा सकते हैं।इससे छात्रों की विभिन्न क्षमताओं का आकलन किया जा सकेगा।

मल्टी-मूल्यांकन प्रणाली को अपनाना चाहिए। छात्रों का मूल्यांकन केवल एक परीक्षा के आधार पर नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि उनकी कक्षा प्रदर्शन, परियोजना कार्य, शोध कार्य, और अन्य गतिविधियों के आधार पर भी किया जाना चाहिए।

छात्रों के मूल्यांकन की प्रक्रिया मे पारदर्शिता और निष्पक्षता महत्वपूर्ण है। छात्रों को मूल्यांकन प्रक्रिया को जानने का अधिकार होना चाहिए ! मूल्यांकन प्रक्रिया को निष्पक्ष होना चाहिए।

उत्तर पुस्तिकाओं की जांच लापरवाही से होती है और छात्रों को मिलने वाले ठोड उनके वास्तविक शिक्षा के स्तर को नहीं दिखाते हैं।

गोपनीयता और समान मानक किसी भी अच्छे परीक्षा की पहचान माने जाते हैं। लेकिन बिना उचित सावधानी बरते, गोपनीयता घोटालों को जन्म देती है।

छात्रों के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर ध्यान देना चाहिए। परीक्षा प्रणाली को इस तरह से डिज़ाइन किया जाना चाहिए कि यह छात्रों में तनाव और दबाव को कम करने में मदद करे। अभिभावकों को इस नई परीक्षा प्रणाली के बारे में जागरूक करने की आवश्यकता होगी।

इन परिवर्तनों से भारत में परीक्षा प्रणाली में सुधार होगा और छात्रों को एक बेहतर भविष्य बनाने में मदद मिलेगी।

परीक्षा की प्रभावशीलता पर देशव्यापी बहस चलनी चाहिए।

–प्रो. अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति कानपुर, गोरखपुर विश्वविद्यालय, वैदिक विश्वविद्यालय निंबहारा, निर्वाण विश्वविद्यालय जयपुर, अध्यक्ष आईएसएलएस, प्रिसिडेंट सोशल रिसर्च फाउंडेशन, कानपुर

इस भ्रम को तोड़ना ही होगा

डॉ. रामावतार शर्मा

आजकल हम दख रह ह ाक सामान्य जन के वार्तालाप और राजनीतिक भाषणों में विकास की बातें अभूतपूर्व रूप से की जा रही हैं मानों देश के हर घर में संपन्नता का साम्राज्य हो गया हो। अब सरकार और लोग यदि सपनों में रहना चाहते हैं तो यह उनका अपना निर्णय है, उनका अधिकार है कि वे ऐसा करते रहें। पर सपने के पार की बातें ऐसी हैं जो शायद भविष्य के लिए ज्यादा महत्वपूर्ण हैं। सबसे पहले तो यह जानना होगा कि यह विकास किस दिशा में हो रहा है।

संधारणीय विकास (सस्टेनेबल डेवलपमेंट) ही वास्तविक विकास होता है जिसमें वर्तमान में उपभोग करते हुए भविष्य के लिए संसाधनों को सुरक्षित रखा जाए। यदि हमने आज के अल्पकालीन विकास के लिए सारे संसाधन इस प्रकार से काम में ले लिए कि आने वाली पीढ़ियों के लिए कुछ खास बचा ही नहीं तो यह विकास नहीं हमारा भ्रम है।

विकास का मतलब मात्र सड़कें, पुल, रेल मार्ग, बंदरगाह और एयरपोर्ट बनाना ही नहीं होता है। उपरोक्त निर्मितियां आवश्यक हैं इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है परंतु यह सारा काम एक संतुलन के तहत होना चाहिए। यदि धरती पर शांति नहीं होगी, संपन्नता हर योग्य व्यक्ति तक नहीं पहुंचेगी, लोग सुरक्षित नहीं महसूस करेंगे, व्यक्तिगत सम्मान नहीं होगा तो सारी भौतिक सुविधाएं बेमानी हो जाएंगी। चूंकि विकास एक बड़ा राजनीतिक मुद्दा होता है तो इस बात पर हमेशा जागरूकता रखनी होगी कि यह संधारणीय है या अवहनीय (अनसस्टेनेबल) है। यदि जनता इस बारे में जागरूक नहीं है तो अल्पकाल की सुविधाओं की अकल्पनीय कीमत चुकानी पड़ सकती है। भारत सहित एशियाई देशों में व्यक्ति की औकात उसके कार्य से देखी जाती है जैसा कि मध्यप्रदेश के एक जिलाधिकारी द्वारा एक ट्रक ड्राइवर के साथ कटु व्यवहार से स्पष्ट होता है। कार्य के अनुसार जिलाधिकारी एवं ट्रक ड्राइवर दोनों का अपने स्थान पर महत्व होता है और देश के नागरिक होने के नाते दोनों ही सम्मान के अधिकारी हैं परंतु क्या वास्तविकता में ऐसा होता है? सामाजिक सम्मान नहीं मिलने के फलस्वरूप ही देश का श्रमिक वर्ग गैर जिम्मेदार होता जाता है।

देश चाहे कितना ही विकास कर ले पर यदि इससे प्रति व्यक्ति कार्य के अनुसार आय नहीं बढ़ती, लोगों का जीवन स्तर ऊपर नहीं उठता, शिशु मृत्यु दर कम नहीं होती और बालक-बालिकाएं स्कूल शिक्षा से वंचित रहते हैं तो यह विकास एक तरफा होगा जिसमें आम लोगों की कीमत पर धनी और धनी होते जाएंगे और सबल निर्बल के बीच खाई खतरनाक तरीके से बढ़ती जाएगी। आर्थिक विकास यदि सामाजिक विघटन, पर्यावरण की हानि और धन संपदा के एकतरफा प्रवाह के साथ होता है तो यह एक मिथ्या विकास है क्योंकि तब यह संधारणीय विकास हो ही नहीं सकता। भारत में पर्यावरण बीमार हालात में है और लोगों का एक विशाल वर्ग ऋण की अर्थव्यवस्था पर टिका है। यहां नीति निर्धारकों को यथार्थ पर उतर कर स्थिति को लगातार संभालना होगा वरना विकास का गुब्बारा कभी भी फूट सकता है। दो चार साल के तीव्र विकास से कुछ होने वाला नहीं है क्योंकि 145 करोड़ पार करती जनसंख्या को संभालना किसी भी सरकार के लिए आसान नहीं होता है।

यहां सरकार को कोसने से भी काम नहीं चलने वाला है। कुल मिलाकर सरकार के कई आर्थिक कदम प्रसंशनीय ही कहे जाएंगे बस पारदर्शिता की कमी खलती है। जहां तक पर्यावरण और प्रदूषण का सवाल है वहां पर सरकार कोई अधिक अंक नही पाती है पर नितिन गडकरी के नेतृत्व में राष्ट्रीय राजमार्गों पर हो रहा कार्य प्रशंसा के लायक है। यहां एक बात याद रखनी चाहिए कि भारत जैसे विशाल देश के लिए दो-चार साल की आर्थिक प्रगति पर सीना फुलाना महत्वहीन है, आधारहीन आत्म प्रशंसा है। यहां की समस्याओं का समाधान कई दशकों तक पर्यावरण एवम् संसाधनों को सुरक्षित रखते हुए लगातार विकास की गति बनाए रखने से ही संभव है। भारत का विकास मॉडल एक तरफा रहा है। उदाहरण के तौर पर फसल आते ही आलू, टमाटर, जीरा, ज्वार आदि सभी इतने सस्ते हो जाते हैं कि किसान के हाथ कुछ नहीं लगता पर कोल्ड स्टोरेज के मालिक आगे चलकर बेतहाशा मुनाफा कमाते हैं। इन विसंगतियों को दूर करने के प्रयास नजर नहीं आ रहे हैं और ना ही इस बारे में कोई गंभीर विचार मंथन होता दिखाई देता है। भारत जैसे देश में व्यापक जनचेतना के अभाव में प्रकृति का विनाश रुकना मुश्किल लगता है और लालची लोग अथाह धन संग्रहण कर विदेशों में भवन और स्थाई निवास पत्र ले कर अपनी पीढ़ियों को सुरक्षित कर रहे हैं। जिन लोगों की पीढ़ियों को यहां इस भारत भूमि पर रहना है उन्हें इस भ्रम को तोड़ना होगा कि भारत में सब ठीक ठाक है।

–डॉ. रामावतार शर्मा,
(चिकित्सक एवं लेखक)

मीठी भुगड़ी के हिस्से आ रही कड़वी यादें, तालाब निगल रहा बेरों की बोरटी

बीकानेर। यहां से बाहर प्रवास करने वाले यहां के वाशिंदों में भुजिया, पापड़ ,सूखी सब्जियों के अलावा सूखे बेर यानी भुगड़ी का भी खासा क्रेज रहा है। सुजानदेसर रोड पर सालमनाथ जी के धोरे के आसपास की बाडियां रियासतकाल से ही मीठे बेर एवं भुगड़ी के उत्पादन लिए प्रसिद्ध रहे हैं।

हालांकि, करीब तीन दशक से इस क्षेत्र में पैदा होने वाली यह नियामत अब जमीदोज होने की स्थिति में है। गंगाशहर, भीनासर, किसमीदेसर एवं आसपास के क्षेत्र का घरेलू एवं बरसाती पानी चांदमलजी के बाग एवं सड़क के दूसरी तरफ दर्जनों बीघा में पानी फैल जाने से यहां बेर की सैकड़ो बोटियां यानी झाडियां विलुप्त होने के कगार पर हैं।

कई पीढि यों ने अपने खून-पसीने सींचकर बेर की इन झाडियों और पेड़ों को लगाया था। हालांकि आरयूआईडीपी के माध्यम से करोड़ों रुपए खर्च कर बनी योजना से पानी गोचर भूमि में जाने लगा है, लेकिन अभी भी सडक के दूसरी तरफ ब्राह्मणों के मोहल्ले में दर्जनों बीघा क्षेत्र में गंदा पानी पसरा हुआ है। इसने झाड़ियों को निगल लिया है। अब गिनी - चुनी बाडियों में ही बेर की झाडिया बची हैं। उन पर लगने वाले बेरों की मात्रा भी इतनी कम होती है कि सब्जी के साथ-साथ स्थानीय बाजार में ही बिक जाते हैं। पीढ़ि यों से इस काम में लगे परिवार के हरिराम माली 30 - 35 वर्ष पूर्व की स्थिति को याद करते हैं, जब यहां आसपास की बाडियों में सैकड़ो बेरों की झाडियां होती थीं और उनसे सैकड़ों किलो बेर रोजाना होते थे। फिर इन बेरों की छंटाई होती थी। जो ज्यादा गीले होते थे उनको कई दिनों तक धूप में भुगड़ी बनने के लिए सुखाया जाता था। बेबी, इन्द्रा आदि ने बताया कि महिलाएं उस दौर में झाडियों से नीचे गिरे बेर चुगने के लिए बड़ी संख्या में बाडियों में जाती थीं और उनके लिए यह रोजगार का भी अच्छा साधन था।

गंगाशहर बाजार के पुराने दुकानदारों में शुमार सुरेंद्र कुमार गोलछा के मुताबिक, करीब 25 - 30 वर्ष पहले दुकान में भूगड़ी की खपत सालाना एक क्विंटल तक हो जाती थी, जो अब घटकर पांच - सात किलो ही रह गई है। पहले यहां से जाने वाले प्रवासी कोलकाता, असम, दिल्ली, गुजरात आदि स्थानों पर भुगड़ी ले जाते थे। फिलहाल, एक किलो बेर की कीमत करीब 40 रुपए है, जबकि भुगड़ी अस्सी से सौ रुपए प्रति किलो तक मिलती है। हालांकि, यह स्थानीय खपत को भी पूरा नहीं कर पाती। भुगड़ी के लिए तो बेर बचते ही नहीं।महानगरों में रहने वाले लोग निकटजनों के लिए बीकानेर की नमकीन के साथ भुगड़ी अवश्य ले जाते थे। अब इसका क्रेज और उत्पादन दोनों ही कम हो गया है। आज की किशोर-युवा पीढ ी तो भुगड़ी के स्वाद से ही अनजान है।

नाल में 1 फरवरी को होगा एयर शो, आसमान में दिखेंगे सूर्यकिरण प्लेन के करतब

बीकानेर। भारतीय वायु सेना के एयर शो की बीकानेर के नाल स्टेशन में तैयारियां चल रही है। इस एयर शो में सूर्य किरण एरोबेटिक्स टीम के प्लेन शामिल होंगे। लाल रंग के इन विमानों पर सफेद पट्टी बनी होती है। जो आसमान में कलाबाजियां करते बेहद खूबसूरत दिखते हैं। आमजन 1 फरवरी को बीकानेर पर आसमान में इन कलाबाजियों को देख सकेंगे। मुख्य आयोजन नाल में 1 फरवरी को सुबह 11 बजे शुरू होगा। नाल में यह डिस्प्ले प्लेन उड़ान भरेंगे और आसमान में विभिन्न आकृतियां बनाएंगे।

इसी के साथ आसमान में उतरे पैराशूटर्स भी साहसिक प्रदर्शक करेंगे। अभी 12 से 14 जनवरी तक मुम्बई में तीन दिवसीय एयर शो का आयोजन किया गया था। इसमें वायु सेना की सारंग हेलीकॉप्टर डिस्प्ले टीम भी शामिल हुई थी।

नाल स्टेशन में सुबह 8.30 बजे से आमजन को एयरशो देखने के लिए प्रवेश दिया जाएगा। इसमें पहचान दस्तावेज देखकर प्रवेश मिलेगा। मोबाइल व कैमरा साथ नहीं ले जा सकेंगे। साथ ही खाने-पीने का किसी तरह का सामान नहीं ले जा सकते है। एयरशो 11 बजे शुरू हो जाएगा।

एयरशो को लेकर वायुसेना के अधिकारियों ने संभागीय आयुक्त कार्यालय में प्रशासनिक अधिकारियों के साथ पिछले दिनों बैठक भी की थी। इसमें नाल और आस-पास की एक-दो किलोमीटर की परिधि में कोई भी मृत पशु और कचरा आदि खुले में नहीं फेंके जाने को लेकर बात की गई। एयरशो में यदि आम आदमी को देखने के लिए अनुमति दी जाती है, तो आयोजन स्थल तक पहुंचने के रास्ते में ट्रैफिक जाम जैसे परेशानी भी हो जाती है। स्थानीय प्रशासन व पुलिस लोगों को नियंत्रित करने, आम जन बनकर दुश्मन देश का कोई जासूस नहीं घुस जाए तथा सुरक्षा और जांच की व्यवस्थाओं को चाक चौबंद किया गया है।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

मंगलवार 30 जनवरी, 2024

माघ मास, कृष्ण पक्ष, चतुरथी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2080, उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र रात्रि 10:06 तक, अतिगंड योग दिन 10:42 तक, बालव करण प्रातः 8:55 तक, चन्द्रमा आज कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-मकर, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-धनु, बुध-धनु, गुरू-मेष, शुक्र-धनु, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज कुमार योग रात्रि 10:06 से आरम्भ होगा। आज चतुरथी तिथि में वृद्धि हुई है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः चर 9:54 से 11:14 तक, लाभ-अमृत 11:19 से 2:01 तक, शुभ 3:21 से 4:42 तक।

राहूकालः 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 7:18, सूर्यास्त 6:02

मेष

परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी।

वृष

परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न रहेगा। आवश्यक कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी।। व्यावसायिक कार्यों में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

मिथुन

घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित विवादों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त व्यावसायिक कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ से राहत मिलेगी। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

सिंह

आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। धन हानि हो सकती है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

कन्या

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

तुला

व्यावसायिक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है। व्यावसायिक खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी।

वृश्चिक

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

धनु

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर

व्यावसायिक खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

कुंभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

मीन

घर-परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।